15194

(ओ३म)

श्रीरामविलास

प्रणीत।

ठाकुर मथुरा प्रसाद सिंह

चौपाई, दोहा, छन्द, सोरठा इत्यादि में अति परिश्रम से
रचना कर भगवद्भक्तों के हितार्थ अपने निज व्यय से
छपवा कर प्रकाशित किया।

शुभस्थान चौगड़वा-पोस्ट-छावनी प्रान्त बस्ती

प्रथमबार ५०० कापी मूल्य ।-)

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस लखनऊ में छपा

सर्वाधिकार ग्रन्थ रचयिता ने स्वाधीन रक्खा है।

श्रीगणेशाय नमः

15-198
अयोध्या

श्रीराम चन्द्राभ्यांनमः श्रीहनुमतेनमः

अथ श्रीरामबिलास प्रारम्भः

(बाबू मथुराप्रसाद सिंह रचित)

॥ श्लोक ॥

बन्देहं श्रीराम नामं पुष्टपोत भवाब्धिकम् ।
माधवाष्यसहस्रंच तुल्य जापक सिद्धिदम् ॥ १ ॥
श्रीगणेशं आदि पुज्यं पुंज सीमं शुभ करम् ।
हर्त कुबुद्धिं बुद्धिदा मथुरा नमः लम्बोदरम् ॥ २ ॥

सो०--बंदौं श्रीगणराज, गजबर मुख मंगल भवन ।
धीमानन सिरताज, द्रवहु दयानिधि शिव सुवन ॥ १ ॥
बंदौं शारद देबि, चंद्रमुखी धनि रूरता ।
देव मनुज मुनि सेवि, मातु हरहु मम कूरता ॥ २ ॥
बंदौं शम्भु भवानि, जगपितु मातु मनोज अरि ।
राम चरित सुख खानि, कहत सुनत अनुराग भरि ॥३॥
श्रीगुर चरण सुकंज, बंदौं रघुपति कृपातनु ।
भवभय दारुण भंज, बिदित सुमहिमा शास्त्र भनु ॥ ४॥
बंदौं सकल सु संत, करुणा करि दीजै सुमति ।
कीन चहौं सिय कंत, चरित बुद्धि मम हीन अति ॥५॥

बंदौं श्रीगुरु तुलसी दासू । हरिगुन करहुं अनुग्रह जासू ॥
बंदौं पुरजन युत निमि भूपा । जाहि रामपद प्रीति अनूपा ॥
बंदौं अवधपुरी सरि सरजू । जहाँ होत सब अघ दुख हरजू ॥

जगमहँअगिनितजियचहुँखानीं । औधतजेतनुभवभय हानीं ॥
बंदौं श्रीबशिष्ठ मुनि राऊ । विधिगति छेंकें अमित प्रभाऊ ॥
बामदेव आदिक मुनि नाना । प्रणवौं सबहिं द्रवहु बुधिमाना ॥
बंदौं अवध भूप पद ताके । प्राणते अधिक राम प्रिय जाके ॥
कौशिल्यादिक मातन्हि पाऊँ । प्रणवौं सबहिं सु मृदुल सुभाऊ ॥
दो०–भरत लखन रिपुदवन के, बंदौं चरण सुकंज ।
रघुबर भ्राता मोंहिं पर, द्रवहु सुजन मनरंज ॥ १ ॥
बंदौं सकल अवधपुर बासी । जिनपर ममता प्रभुकी खासी ॥
बंदौं हनुमतपद जलजाता । जासु सुजसबल त्रिभुवनख्याता ॥
बंदौं सब कपि सहित हरीसा । अरु सब रिक्षन जुत्त ऋक्षीसा ॥
बंदौं बहुरि निशाचर राऊ । मम ऊपर सब होउ पसाऊ ॥
चरअरुअचरसकल भवप्रानी । प्रणवौंसिय रघुवरमैं जानी ॥
मोपर कृपा करो सब कोई । हरि गुन गावों जेहि विधि सोई ॥
बंदौं जनक सुता जग माई । राम प्रिया सेवक सुखदाई ॥
बंदौंदसरथसुत पदकंजा । जिनहिंनमत शिवबिधि मुनिपुंजा ॥
दो०–राजिव लोचनदास हित, धरे सरासन बान ।
विपतिनिधनकरिदेत सुख, करुणानिधि भगवान ॥ २ ॥
बंदौं पद श्री सीता रामू । जिनहिं परम प्रिय दीन ललामू ॥
गिरा अर्थजल लहरि किनाईं । भनियतविलग नविलग सदाईं ॥
बंदौं नाम राम सिय पीको । हेतु अनल तम सोसु शसीको ॥
अज हरिशंकर मयश्रुति प्राना । अगुनअनूपमगुनसुनिधाना ॥
हरिके सहस नाम सम जानी । जपत सदा शिव सहित भवानी ॥
जंतु मरत कासी महँ ईसा । करैं नाम बलतें दुख खीसा ॥
राम नाम अघ नासक कैसे । तूल अतुल मन पावक जैसे ॥
नामकी महिमाअमितअथाहू । कहिनाहिंपारलहहिंअहिनाहू ॥

दो०—गणपति शंकर आदि कबि, जानेउ नाम प्रताप ।
प्रथम पुज्य विषपान सुचि, भेकरि उलटा जाप ॥ ३ ॥
नाम जपेउ ध्रुवसहित गलानी। लहेउ मातु सुतहरि रजधानी ॥
हाटककशिपु तनयजपिनामाँ। भयो भगत भूषणअभि रामाँ ॥
श्रीहनुमान सुनाम सुमीरा ।निज बस करि राखेउ रघुबीरा ॥
चारिव जुग चारिउश्रुतिमाहीं । नाम प्रताप प्रसिद्धि सुआहीं ॥
कृतजुगप्रभुहिंध्यायअरुनामू। जपकरि लोग लहहिं विश्रामू ॥
त्रेताजुग मख करि सब लोकू। नामहुँ जपि तबहोहिं अशोकू ॥
प्रभु पद पूजहिं द्वापर मांहीं । अरु जपि नाम नाघि भव जाहीं ॥
कलजुग केवल नाम अधारा । जपत लहहिं भवसागर पारा ॥
दो०—प्रीति अप्रीति रिसाय अरु, आलसहूँ जे नाम ।
सुमिरें मथुरा तौ तिनहिं, मंगल है सब ठाम ॥ ४ ॥
नाम अनेक पतित खल काहीं ।तारेउ बिदित पुरानन माहीं ॥
सुमिरि सो नाम पाइ बुधि रूरी । मथुरा कहरघुपति गुण भूरी ॥
जो गिरिजा प्रति सम्भु कहीला। बरणों संछेपहिं सोइ लीला ॥
जेहि विधि राम कलेवा कीन्हाँ । सारिन सरहजकोसुखदीन्हाँ ॥
वरणबकथासोविस्तरआछें । मति अनुरूप बिबाह के पाछें
धनि धनि रामनाथ प्रधानहिं। जो किय राम कलेवा गानहिं ॥
सोइ चरित मैं अधिक कहीलो। राम जन्म सें राजगदीलो ॥
नेति २ कह सकल पुराना । आगम निगम महेश सुजाना ॥
अपने गिरा सुफल के कारण । गावों हरि गुण हरि भौ बारण ॥
सुमिरि राम सिय कथा अरम्भा ।करौं जोसुनिनासैमददम्भा ॥
दो०—श्री सम्बत वनइस सै, चौंसठि चइत सुमास ।
राम जन्म तिथि राम गुण, बरणौं सहित हुलास ॥ ५ ॥
अवध पुरी जग विदित सुहाई। तहँ निवसैंदसस्यंदन राई ॥

जासु प्रसंशा निगम पुराना। सकल करत सबजान जहाना॥
कौशिल्यादि सुनारि प्रवीनी। पति अनुकूल सकल छल हीनी॥
दम्पति धर्म कर्म अति नीका। भाव भगति धनु पानी जीका॥
येक बार दशरथ महराजा। यज्ञ कराये पुत्र के काजा॥
आनँद युतबीते कुछ काला। अज अनीह निरगुन गुनशाला॥
गोपति ब्रह्म सत्चितानंदा। चारि रूप धरि सोइ सुख कंदा॥
भये तनयनृपदसरथकेकिमि। जलपालावोला न विलगजिमि॥
दो०—उतसौ भयो अपार अति, सकल लोग हरषाहिं।
बाजहिं बाजाबिबिधिबिधि, पुरअरु गगँनहुमाहिं।३॥
जात करम नांदीमुख श्राधा। करि नृप दीन्हें दान अगाधा॥
अति आनंदअवधपुर छावा। नेगी नेग लहेउ मन भावा॥
नाम करणकी औंसर जादिन। आयगुरू धरि दीन सु ताछिन॥
राम भरत लछिमन रिपुदौनू। खेलत आँगन में छबि भौनू॥
चहुँ सुत लखि दम्पति सुख कैसे। जन्म रङ्क पारस लहि जैसे॥
करण भेद चूड़ादि सुकामाँ। सकल कीन भूपति अभिरामाँ॥
राम लखन सन प्रीति घनेरी। तैसै भरत शत्रुहन केरी॥
दीन जनेव गुरू हरषाई। बिद्या पढ़े सकल सब भाई॥
भाइन सहित राम छबि देखी। हरषहिं पुर नर नारि विशेखी॥
संग बंधु सब सखा सुहेला। सरजू तट खेलैं बहु खेला॥
दो०—कीन्हेउ बहु बिधि चरित प्रभु, मातु पितहिं सुखदीन॥
मैगतान्त कुछु बरष सुख, दिन प्रति बढ़त नबीन॥७॥
एक बार कौसिक मुनि आये। चारिव तनय देखि सुख पाये॥
निशिचर निधन कारवन हेतू। नृप सन जाचि गाधिकुल केतू॥
राम लखन कहँ निज थल लाये। दुष्टन हते मुनिन सुखपाये॥
तेहि औंसर मिथिलापुर माहीं। सुता स्वयंबर जनक कराहीं॥

सुनिधनुमखकौसिक मुनिसाथा। प्रमुदितचलेलखनरघुनाथा ॥
ऋषि तिय तारि गंग पहँ आये। सुरसरि जन्म हेतु मुनिगाये ॥
सुनि हरषे प्रभु सकल नहाने मिथिलहिं आय राउ सनमाने ॥
दुसरी जून राम दोउ भाई। देखन गये नगर हरषाई ॥
दो०—पुरभरि लखि निज रूप महँ, सबहिं लोभाय अथोर।
आये गुर पहँ सयन किय, पुनि उठि कय बड़े भोर ॥८॥
प्रात क्रिया करि गुरु पद कंजा। बंदे आइसु लहि नै पुंजा ॥
सुमन लेन गौनें दोउ भाई। बाग अनूप देखि सचुपाई ॥
सखिनसहिततेहिछनासिय आई। गौरी पूजिपरमनिधि पाई ॥
राम लोभाने सिय छवि जोही। राम स्वरूप देखि सिय मोही ॥
सिय सुखमा हिय करत बड़ाई। राम लषन गे जहँ मुनिराई ॥
लहि प्रसून करिअर्चमुनीशा। पुनि दोउभाइनदीनअशीशा ॥
हरषे सुनि पूरण निज काजू। संध्याकाल निरखि द्विजराजू ॥
तेहिमिसुसियमुखछबिप्रभुगाई। आयेगुरुपहँनिसिअधिकाई ॥
दो०—उठ सरवरी बिगत लखि, लषन राम हरषाय।
प्रातक्रिया करि गुरुचरण, कमल धरे दोउ भाय ॥ १० ॥
जनक बिनै आयो तेहि काला। गये सकल जहँ धनुमषशाला ॥
तहँ जस भाउ रहा जेहि केरे। रामरूप तस सकल चितेरे ॥
पुनि बहु भूप भरे अभिमानै। उठ महेश सरासन भानै ॥
हारे सकललागिमुख स्याही। धनुभंजनकहँअहामिति जाही ॥
तब रघुवर भव धनुष बिसाला। भंजेउ सिय मेली जयमाला ॥
चाप भंग धुनि सुनि भृगुनाथा। आयदेखाये अहमित गाथा ॥
पुनिनिजधनुदियरामचढ़ाये। मुनिकरिअस्तुतिविपिनसिधाये ॥
कौसिक के नृप आइसु पाई। कोशल पति कहँ बोलि पठाई ॥
दो०—सुनि राजा दसरथ हरषि, साजि सुभली जनेत।

आये जनवासे लसत, चारिव तनय समेत ॥ १० ॥
सो०-राम बरात समूह, पै कछु गिनती करत कवि ।
डेढ़ कोटि गज जूह, तीस कोटि बर बाजि हैं ॥६॥
कोटि पचीस उदार, जगमगात हैं पालकी ।
बहुरि भार बरदार, सात कोटि पच्चीस लख ॥७॥
दो०-ऊँट जाति सेवक अमित, बाजदार पँच कोटि।
कोटि सवा त्रै रथ सुभग, रवि स्यंदन नहिं जोटि ॥ ११ ॥
साठि लाख अरु नौ सहस, चढ़ा सांड़िया बीर।
मथुरा,पैंदर के लिये, लेखा करत अधीर॥ १२ ॥
उन्तालिस दिन लगनतें आगे। आये बराती सबअनुरागे ।
दोउ दिसिआनंद बाढ़त जाई। निमिषिसरिसदिनरातिसेराई॥
ब्रह्मा सोधिसुलगन पठाये ।गुने योतिषिन के मन भाये ॥
मास सुअगहन पाख उजेरा । तिथि पंचिमी सुहावनि ढेरा ॥
ब्याहै हित सुधि पठई राजा । सुनि नृपके बाजे बहु बाजा ॥
गुरु सन बूझिसुमुदित भुवारा । विधिव्रतकीन बंस ब्योहारा ॥
राम सुदूलह बेष सुहाये । ब्याहै चलेसकल हरषाये ॥
सुरन सुहर्षि दुंदुभी ठोंकी । बरषत सुमन कल्प बृक्षवोंकी ॥
दो०-मगमहँ होत अनन्द अति, आये सब नृपद्वार ।
बर परिछहिं रानी मुदित, गाय सुमंगल चार ॥ १० ॥
अर्घ देन लाईं कुँवर, सोहत जहाँ बितान ।
दीन सु आसन आरती, कीन मोद अधिकान ॥१४॥
पुनि बिदेहँ दशरथ मिलि देता । अर्घ पावँड़े प्रीति समेता ॥
लाये सबहिं सुमंडफ माहीं । धरि आसन निहोरि सबपाहीं॥
बैठारे बिप्रन कहँ अर्चे । सब बरतिहन पूजि मन फर्चे ॥
दशरथ कहँ अरचे रति नाना । जानिसम्भु सम भाउ न आना ॥

रामचन्द्र मुख चन्द्र सरीखा। बैठि चकोर सरिस सब दीखा ॥
कहा बसिष्ठ सु औसर जानी। लावहु कुँवँरि बेगि सुनि बानी॥
गौने सतानन्द कह रानी। सुनि भईं मुदित न जाय बखानी॥
बोलि सु आसिनि भूसुर नारी। करवाई कुल रीति बिचारी ॥
छं०—कुलरीति कराई, अति हरषाई सब मिलि मंगल गावैं।
कलकोमल बानी सुनिसकुचानी कोकिलबोलि न पावैं॥
नौसप्त सिंगारा, सखिन सँवारा, सकल अभूषण साजी।
सीता जगमाता, कोमलगाता, कोटिन रति लखिलाजी॥
तब चलीं लिवाई, सखिन सुहाई मत्तगयंद सु चाली।
गावत कलबानी, सुनि मुनि ज्ञानी, ध्यानतजैं तपसाली॥
आवति सिय देखी; हर्ष बिशेषी, सबके उर न समाई।
सब देव सु हर्षे, सुमन सुबर्षे, मनहींमन सिरनाई॥ २॥
दो०—सीता आई मंडपहिं, सांति पढ़ैं मुनि राय।
गौरि गजानन सुर सकल- दुहुँकुल गुरू पुजाय ॥१५॥
सुभग सु आसनसियबैठाई।पुनि सिय जननिमुनिनबोलवाई॥
लाई रानि सु आसिनसाजी। जनक बामदिसि अनुपमभ्राजी॥
हेमकलस कोपर सुमनीके। सुचि सुगन्ध सुभ जलभरि नीके॥
दम्पति बरपदधोवतभयऊ। जो शिवहिय बसमुनिमनदयऊ॥
वर दुलहिनि की करत लजोरी। गुरुकिय साखोचार बहोरी॥
पानिग्रहन भै अधिक उछाहू। कन्यादान दीन नरनाहू॥
करि सु होम पुनि गांठि जोराई। कुवँरि कुवँर कलभावरि दाई॥
दिये सेंदुर अरु सकल बिधाना। करवाये मुनि बरन सुजाना॥
दो०—पुनि मिथिलेश सुहर्षि मन, दिये बिवाहि तिहुँ भाय।
सुभगचहूँ जोरी निरखि, हरषहिं लोग लुगाय॥ १६॥
राम सरिस भै सब कर सादी। भरेउछाह तिहूं पुर जादी॥

बर दुलहिनिलसैं एक निकेता । जनुजिय चहुँपनबिसुनसमेता ॥
लखि अनुरूप सुभग चहुँजोरी । भइसुरनरमुनि कै मतिभोरी ॥
दसरथ मनमुद बरनि न जाई । क्रियनसहितजनुचहुँफलपाई ॥
दायज दिये नृपसह अनुरागा । बहु हथियार अस्वबहु नागा ॥
स्यन्दन भूषन चीर अनेका । महिषी धेनु एक ते एका ॥
दासीदास समूह सु दीये । कोसलपति प्रमुदित सब लिये ॥
दीन जाँचकन को मन भाये । बचातवन जनवाँस पठाये ॥
दो०--जनक निहोरे सबहिं मुनि, दीन असीस अनूप ।
नृप प्रसंसि जनवास कहँ, गौने सह सब भूप ॥ १७ ॥
देव प्रसून बरषि सचुपाया । मुनिवर आयसु लहि सबजाया ॥
सबर सुन्दरिनि कोहबरधामा । लाईं लाजत बहुरति कामा ॥
पुर प्रमदन बिबुधन के तीया । तहँ लौकिक ब्यउहार सुकीया ॥
हाँसबिलास बरनि नहिं जाई । पुनि जनवाँसे सबहि पठाई ॥
बहुरि रसोई भई तयारा । सकल बोलाय जेवाय सुवारा ॥
पान देइ अर्चे सह प्रीता । गे जनवाँसे सब प्रमुदीता ॥
बहि निसि गै लखिसकल समाजा । सोयबड़ेप्रातउठि राजा ॥
प्रातक्रियाकरि गुरु पद रेनू । सिर धरिपुनि चहुँ लाख सुधेनू ।
छं०-चहुँ लाख धेनु मगाय सब । बधि करि अलंकृत छबिछई ।
तब बोलि बिप्रन को महीपति सकल सुरभिन को दई ॥
मुनिनिकर प्रमुदित देहि आसिष भूप सुनि सुखउरभरे ।
मथुरा लिये पुनि बोलि जाचक बृंद सुखिनरपति करे १
सो०-बढ़उ अनन्द बिशाल. सब प्रमुदित कहि जाय नाहिं ।
इमि सुख तीनिहुँ काल, भै नाहिं है नाहिं होय गो ॥ ८ ॥
उहाँ जनक प्रमुदित मनमाहीं । बोलि पठाये श्रीनिधि काहीं ॥
हर्षि सखनजुत सहँसहि आये । करि जोहार सादर सिरनाये ॥

करन कलेऊ औसर देखी। बोले जनक सुहर्ष बिसेखी ॥
जाहु तात जनवाँसे माहीं। बिनैं सुनाय अवधपति पाहीं ॥
कुँवरनको लावहुनिज साथा। सुनिप्रमुदित नृपपद धरिमाथा ॥
श्रीनिधि लखन को लै निज संगा। गौने चाढ़ि २ चपलतुरंगा ॥
नाना जाति सुभग हय सारे। बेगि निरखि खगनाय ह हारे ॥
तिनपर निमिबंसी सुत सोहैं। बैकिशोर सुखमाँ मनमोहैं ॥
दो०—तेहिमहँ श्रीनिधि छबि अधिक, काम न पटतर आहिं।
पंथ नचावत हय सकल, अमित मोद मनमाहिं ॥१८॥
पहुँचत भे जनवास महँ, जहँ राजत औधेस।
रघुबंशी आसान बहु, निरखि लजात सुरेस ॥ १९ ॥
चोपदार जाँगरे सुभोग। बंदी बिरद उचारत जोरा ॥
गुनगायक गुन गावत भ्राजैं। नौबतादि बाजा बहु बाजैं ॥
कोसलपतिकर बिभौ समाजू। देखि लजात धनद सुरराजू ॥
लखि मिथिलेस तनय आनन्दे। हयतें उतरिसकल सानन्दे ॥
बहनोइन जुत भूपति काहीं। कीन जोहार मुदितमनमाहीं ॥
तब श्रीनिधि कै कर गहि राई। बैठाये सब कहँ हरषाई ॥
अति सतकार सकल कर कीन्हें। भूपसुभाव सरलसब चीन्हें ॥
सानुजसमहिं लखि सचुपाये। जिमि ससि निरखि चकोरलुभाये ॥
दो०—श्रीनिधिहू कै छबि निरखि, हरषे राजिव नैन।
तब बिदेहँ सुत जोरिकर, कहन लगे मृदु बैन ॥२०॥
तात कलेऊ करने हेतू। पठई सकल कुँवर क्षिति केतू ॥
सुनि मृदु गिरा प्रेमरस साने। दसरथउर आनद अधिकाने ॥
चारिव कुँवर बोलाइ निजोगू। दीन्हें प्रमुदित भे सब लोगू ॥
दुलहे जइहैं नृप के गेहा। जानि सेवकन सहित सनेहा ॥
लै पटभूषन सुभग अपारा। निजनिज प्रभुकर कीन शृंगारा ॥

सोभा सीयँ सुभग चहुँ भ्राता। नीलपीत जलजात सुगाता॥
सकल सुलच्छ सिख रूपसुहाये। जिनहिंनिरखि बहु मदनलजाये
तदपि अधिक रघुबरछबिछाई। अंग अंग सो बरनि न जाई॥
दो०--पदतल अरुण सुमृदुल अति, कोमल बारिज फीक॥
अङ्गुराब नहिं बालरबि. सुखमा केर थलीक॥ २१॥
सकलसुचिन्ह बिराजत नीका। दहिने पद ऊयर स्वसतीका॥
अष्टकोन अरु रमां बिराजैं। हलमूसल अहिसर पट भ्राजैं॥
बारिज स्यंदन पवि जौ रूपा। सुर तरु अंकुस ध्वजा अनूपा॥
मुकुट चक्र सिंहासन अहई। जमसुदंड जमदंड को दहई॥
छत्र चौर नर अरु जैमाला। ये चौबिस दहिने पद थाला॥
पुनि बायें पदरेखा बरणी। सरजू सरिता गोपद धरणी॥
कलसा केतु जम्बफल लसई। अर्धचन्द्र दर लखि जियफँसई।
पुनिषटकोन और त्रेकोना। गदा जीव अरुबिंदु सलोना॥
दो०--पक्कीसुधा सुकुंडकल, त्रिबली झख ससिपूर।
बीनबंसि धनुतून पुनि, हंस चंद्रिकासूर॥॥ २२॥
ये अड़तालिस चिह्न नित, बसत रामपद माहिं।
मथुरा सुजनन के सदा, सुख सुमदायक आहिं। २३॥
येइ येइ रेखा सियपद माहीं। दाहिन बामभेद पै आहीं॥
सोहत काम कूर्मपद पृष्ठा। नूपुरादि भूषन छवि श्रेष्ठा॥
कल अगुलिन अँगुठन नखजोती। पंकजदलासनि जनु मोती॥
दुहुँपद जावक कलित सँवारे। रचना देखि बिरंचि जू हारे॥
सोहत उभै कमलपद त्राना। लालमदन के जीह समाना॥
लसत कड़ा जुग गुलफ जानुअति, जंघ कदली तरुकिमानुहाति॥
केहरि कटिसम लंक सुहाई। किंकिणि मंजु रुचिर अधिकाई॥
सुभग बिराजति पीअरी धोती। निंदति सिसुरबि तड़ितकीजेती

दो०--राजत नाभी सर त्रिबलि, सीढ़ी रोम से वाल।
उर मुक्तामणि माल जनु, उड़ि बहु आव मराल ॥२५॥
हृदैं पदिक कल भृगुपद रेखा। उर श्रीबस्त सुरुचिर अलेखा ॥
दोउ भुज कलित बिमाल सुहाई। अंगिदादि भूषन छबिछाई॥
कनक सुमणि पहुँची करमाहीं। रेख बिचित्र बरनि नहिं जाहीं॥
अगुलिनि अगुठन नख दुति रूरी। मुदरी लेइ चोरि चितभूरी ॥
याही कर धनु बान बिराजै। सुरन सुखद असुरन दुख साजै ॥
लसत जनेव स्यामतनु बांका। जनुघनपरदामिनि सुभआंका॥
जरद जड़ित अति सोहहिंजामा। रतननिकनबहु लसतललामा
पीत कन्हावरि काँखासोती। छोरनमाहिंलागि मणि मोती॥
दो०-वृषभ कंधसम कंध कल, मंजु कम्बु सम ग्रीव।
सरद इन्दुकी मद हरण, आनन सुखमा सीव।
अधर अरुणरद औलि मृदु, हँसनि हरत जन चित्त।
जनु बिद्रुम सुबिमान सुर, सभा सुमन बरषित्त ॥२६॥
चिबुक सुहनु नासिका सुहाई। लसत बुलाक बिचित्र बनाई ॥
कलकपोल बरणौं केहि भाँती। कामगेन ससि जोति लजाती॥
श्रवनन सुभग सुकुंडल डोलहिं। परसत गालल्लेत मनमोलहिं।
सोहन जुगल नैन छबि पाना। लाजहिं कंज खंज मृगमीना॥
असछबि नहिं त्रैलोकककबीचहिं चितवनि चारु सुधाजनुसींचहिं
उभै भौंह सोभा अधिकाई। मदन धनुष समबरनि न जाई॥
भ्राजत तिलक बिमाल सुभौली।केसनिरखि लाजतिअलिऔली
बिबिधि सुगंध अलक गहवारी। चायसपा सम सुभगनथोरी॥
दो०-पियरी पाग बिचित्र रचि, तेहिपर मणिमै मौर।
अधिक सुहाई छबि निरखि, बिधिहू की मतिहौर ॥२७॥
नखसिख मंजु महाछबि छाई। कहत सारदौ पार न पाई ॥

दूलह भेष रामबपु देखी। शिव सनकादि नदेहँ सेरखी॥
जनु तनु धरे शृंगार सुहावैं। जेहि दिसि चितवैं ताहि लोभावैं॥
इमि सजि सखाअनुज जुतरामा। अस्वनचढ़िचले जनककेधामा॥
सोहत सब रघुबंसिन बारे। रामसखा प्रानहु ते प्यारे॥
नाना जाति केर हैं घोरे। कहौं दुचारिक अहैं अथोरे॥
अरबी जंगलि अमित पहारी। कबुली कच्छि मुंजि कँधारी॥
चिर चेंचक चम्पा दरिआई। गर्रा गुंठि टघनि अस गाई॥
दो०—स्यामकरण कुम्मयत बहु, पीन नवीन सुगात।
सकल अलंकृत सकल बिधि, राजत पंथहिं जात २८॥
बिभौ तेज बहु सुन्दरताई। निरखि थकहिं सब लोग लुगाई॥
श्रीनिधि अपने सखन समेता। रामबामदिसि चलैं सुखलेता॥
दुहुँ दिसि चँवर चलत रघुबरके। छत्र सखादिये सिरमनहरके॥
बाजिनके किये चंचलबागा। बात करत बिहँसत अनुरागा॥
रघुपति हय जगबन्दन नामा। अतुलित बली चालुगुनधामा॥
जेहि लखि लाजत हय रबिकेरे। भूषित भूषन सुभग घनेरे॥
चोटिन गूंथ ललित सु फूला। पद पैंजनि बाजत मुदमूला॥
देखि न परत टाप भू माहीं। जनु महि जरत टारु सहसाहीं॥
दो० लसत चारि जामां सुभग, जीनपोस अति मंजु।
ललित लगामादिक सकल, सोहत सुखमा पुंज॥२९॥
रघुबररुख लखि चलत सुबाजी। देखि होहिं सबकर मनराजी॥
अस्वभेष जनु मनसिजधारू। रामारूढ़ सोह अधिकारू॥
पीत सुपट भूषण तनु स्यामा। मनहुँ जलदजुत उणगनदामा॥
जात नचावत अनुपम मोरा। निरखि सकल हरषाहिं न थोरा॥
भरत बाजितिमिसुभग सुहाई। समुद नामगुन बलअधिकाई॥
लक्खी घोड़ा लषन लालुकी। राजत तनु छबिनिपुनचालुकी॥

रिपुसूदन कर बाजि ललामा। कहि न जाय तेहि चम्पा नामा॥
निरतत सबके आगे धावत। बहुकुरंग अरु मोर लजावत॥
दो० अस्व नचावत जात मग, बहुविधि कौतुक कृत्त।
सब प्रमुदित कहि जाय नहिं, लखि लखिघोड़ननृत्त ३०॥
बाजा औरतकीबकीसोरा। सुनि जुवतिन चाढ़ि अटनअथोरा॥
रामहिं ललकि निहारन लागीं भ्रातन सहित देखि सुखपागीं॥
सखी निरखु सिय मांडवि नाहू। एक रंग नखशिख बपु आहू॥
तिमि उरमिल श्रुतिकीरति बनरा। प्यारी एकै रँग तनु सिंगरा॥
कोउ सखि राम बदन छबि देखी। भई सनेह सुमगन विसेखी॥
निजनिजतनुछबिजि-कमाना। तिनप्रभुछबिलखिगतअभिमाना॥
कोउ तृण तोट टारि ले हाथा। माणि मुनरी महँ लखि रघुनाथा॥
दूलह वेष अनूपम सोभा। हिय सनेह उमगेउ मनलोभा॥
दो०–अनुजनयुत रघुनंदनहि, निरखि निरखि सब नारि।
मधुरी मूरति उरभिनी, प्रेमबिवश भई झारि॥ ३१॥
कोउ सखि बोली चुनुरी आली। जात भूप घर ये छबि शाली॥
करण कलेऊ महिप बोलाये। सादर सब कहँ श्रीनिधिलाये॥
धन्य धन्य मम सुकृत सुप्यारी। जो नैनन भरि इन्हैं निहारी॥
ये दूलह दुलभ संसारा। जेहि छबि निरखि मदनहूँ हारा॥
अमित धन्य है सुकृत सियाको। सखी जो इनहीं लही पियाको॥
चारिव बहिनहैं सुकृतसुरूपा। जिन पायोपति निजअनुरूपा॥
हमरो सबकर सुकृत न थोरी। जो इनकर दरशन भै गोरी॥
बोली अपर सखी मृदुबानी। भलऔसर बानि आय सयानी॥
दो०–भूप सदन कों चली सब बिहँसी इन्हैं हँसाय।
सकल नारि भईं प्रेमवश, इमि बैनन बतलाय॥ ३२॥
एहिविधि मग आनँद अधिकारी। होत मगनसब पुरनरनारी॥

तुरँग नचावत राजदुलारे। जाय सकल पहुँचे नृप द्वारे।
तहँ कल चउक मणिन मे पूरी। बरनि न जाय सोह अतिरूरी॥
सीय मातु की पाय रजाई। सकल सुआसिनि परछन आई॥
मंगल साज सजे अधिकारी। कनक कलश कल दीप सुथारी॥
गावत गीतसुकोमल बैनी। मत्त सुकरिबर चालु सुनैनी॥
सकलनारि लखि दुलहनकाहीं। गातपुलकजलचलदृगमाहीं॥
गिरा मूकभइ यकटक जोहैं। तृण तोरहिं लखिलखि छबिमोहैं॥
दो०—रँगी रँगीली सकलबिधि, तनु नहिं रहेउ सरेख।
को करै मंगलचार तहँ, होस न निज अँगलेष॥ ३३॥
डूबीं प्रेमजलधि में नारी। पुनि धीरज धरि बनिता सारी॥
बिधिवतपराछि गई सबऐना। तबश्रीनिधि कहि कोमलबैना॥
असवारिनते सबहिं उतारी। कहि न जाय प्रमुदित मनभारी॥
चले राम करसों कर करजोरे। बात करत मुसकात अथोरे॥
भूप विदेह को सभा बिराजू। सोहासीन अनेकन राजू॥
द्वीपाधिप देशाधिप भूरे। निमिबंसी सोहैं अति रूरे॥
चोपदार जागरे पुकारैं। नौबति बजति सुराग दुआरैं॥
बिभौ तेज अति बरनि न जाई। उततें उन सब पहुँचे आई॥
दो०—बहु भूपन कर बात रहि, सो भूलेउ तेहि काल।
उठे सकल नृप बेगिहीं, देखि राम सुखसाल॥ ३४॥
सो०—प्रभु अनुजनयुत आय, किये जोहार मिथिलेश के।
ससुर निकट बैठाय प्रमुदित लहि जनु रंकनिधि॥९॥
सब बर देखि सभासद मोही। बहुचकोर जिमिचंदहिं जोही॥
करि कछु सभा रजायसु पाई। चले अयन जहँ सासु सुहाई॥
सीय जननि किमि कहौं बखानी। नहिं पटतर आवति इंद्रानी॥
आवत लखि जामातन काहीं। रानि सभायुत उठि सहसाहीं॥

सकलभई अति प्रमुदित कैसी। बारिदघटानिरखि सिखि जैसी॥
धारि सिंहासन रुचिर धराई। करि जोहार बैठे सब भाई॥
पद प्रक्षालि आरती उतारी। निपट हरषि मणि भूषनवारी॥
चितै राम बरबर छबि अयना। भई प्रेमबश सासु सुनयना॥
दो०—गद गद गातरु मुख बैन, आवन चल चल नीर।
सासु केर गति इमि निरखि, गुनत मनहिं रघुबीर॥३५॥
बहुरि सकुचयुत बूझेउ, बोली सखी प्रवीन॥
उभै न चिंता रानि उर, यह राउर गुन कीन॥३६॥
अली बचन सुनि रानिहूँ, धरि धीरज हरषाय।
लीन बलइया बार बहु, सो सुख बरनि न जाय॥३७॥
पुनि कह सासु सुकोमलबाता। करहु कलेऊ जो रुचि ताता॥
उठे सखाअनुजनजुत रामा। सोभा लखि सकुचत बहुकामा॥
औसर सरिसरानिलै पाथा। सबकर पद प्रक्षालि निज हाथा॥
निपट सु आसन धरि बैठाई। रानी हृदय न मोद समाई॥
धरीं रुचिर हेमन की थारी। लगीं पगासन मृदुल सोहारी॥
भाजि मिठाई विविध प्रकारू। परुसि कै दीन नेगअधिकारू॥
तबलगे जेवन पुनि सिय माई। देहिं लेहिं जेहि जो मन भाई॥
पायकलेऊअचमन कीन्हा। सखिन सुपान जोरि तब दीन्हा॥
छं०—सखि पान दीन्हीं पाय बैठे सकल पोसाक सुधारिकै।
पुनि अँतर आदि सुगंध लेपन करि अली मुद भारिकै॥
लखिराम अनुजन की छबी बनिता अपनपौ वारहीं।
मथुराजूश्रीरघुवंशमणि छबि देखि मति गतिहारहीं॥२॥
सो०—रामस्वरूप अनूप, सोहत सब नृप सदन महँ।
लाजत बहुरति भूप, देखि सुहास बिलास जेहि॥१०॥
तेहिं औसर सुधि सखी सो पाई। श्री निधि कै बनिताछबि छाई॥

सिद्धि आख्य त्रियख्यात जहाना । नौ जोबनमुखइन्दुसमाना ॥
निज रूपहिंरतिकीमद भानी मृगलोचनिनिमिकुलपटरानी ॥
चंचल चखन दरश अतुराई । सखिन समेत राम पहँ आई ॥
लखि ननँदोइन भयसुख कैसे । तल्फत मीन नीर लहि जैसे ॥
पुनि किमि भई मुदित सब नारी । जिमि चकोरि राकेसनिहारी ॥
तब प्रभु कैकरधरि सिधि बाँकी । करिभृकुटि मुखअंचलढाँकी ॥
बोलीं सुनिये राजकुमारा । बड़े तसकर चित चोरन हारा ॥
दो०–चित्त हमार चोराय कै, आयो सासु के तीर ।
सिद्धि केर इमि बचन सुनि, बोले श्रीरघुबीर ॥ ३८ ॥
भामिनि उलटी बात जनि, कहु निज औगुन गोय ।
मम आगमन सुजानि कै, तुमहिंलुकानेवजोय ॥ ३९ ॥
तुमघर अंदर हम सुखमानी । आये तुमहिं परयो नहिं जानी ॥
हे सुकुमारितौमंदिर रूरी । सकल प्रबिसि जहँ जाय न पूरी ॥
रामबचनसुनिसिधि मुसुकाई । कहिकछुगोलहिंपुनिअरगाई ॥
सासुनिकटमहँलागतलाजू । तब निज अयनहिंलावन काजू ॥
रघुनंदन को कर धरिबेगी । हरषि निकर निज मंदिर लेगी ॥
निपटसिंहासन रुचिरधराई । कहिमृदुबयन सबहिं बैठाई ॥
बार बार प्रभु बदन निहारी । अतर सुगंध लगायो प्यारी ॥
सब विधिकरिआरती उतारी । आपन जन्म सुसुफलविचारी ॥
दो०–सखा अनुज की वेष छबि, तदपि अधिक रघुनंद ।
यक टक निरखहिं नारि सब, यथा चकोरिन चंद ॥
सिद्ध सदन नहिं जाय बखानी । मणिनपगार लसत कलसानी ॥
अति बिचित्र चहुं दिशासुहाई । इंद्रज नारि अयनझपिजाई ॥
किये शृंगारसखिनसब राजैं । जिन को लखिरतिरम्भालाजैं ॥
कोउ सखि बैठी पान लगावैं । कोउ फूलन के हार बनावैं ॥

कोउ करपीकदान लिये ठाढ़ी। जोहत राम बदन छबि गाढ़ी ॥
कोऊ आरसी लिये दिखावें। कोउ सिर ऊपर चवंर ढुरावें ॥
निज निज साजसजे सब नारी। प्रीतिकी हूला लागहिं भारी ॥
बहुबिधि बाजा सखिन बजाई। नाद करैं मीठेसुर गाई ॥
दो०—जासुगान सुनि मुनिवरन, परिहरि देत सुध्यान।
देखि अधिक हरषे सखा अनुजनयुत भगवान ॥ ४१ ॥
सिद्धि सुसरहजिसों रघुराया। करतहाँसरस बात निकाया ॥
मथुराजनजेहि रामकोध्याये। कामआदिमद सकल नसाये ॥
नट इव लीला रघुपति करहीं। मेधामान मोह नहिं धरहीं ॥
मोह धरैं ते नर अज्ञानी। अरुजेहि हियनहिं शारंगपानी ॥
पुनि तेहि ऊपर बाम बिधाता। जे धरैं रचौ मोह की नाता ॥
बहुरि रसिक पति पद सिरनाई। कहौं कथा रसिकनसुखदाई ॥
जे नेवतें मिथिलापति केरी। आईं राजकुमारि घनेरी ॥
अति निरदूषन अंगसुबसनू। भूषन सकलसजे जियफँसनू ॥
दो०—राजकुमारी सुभग अति, सोहति सब अलबेलि।
परम प्रवीन न जाय कहि, निपट हांस रसकेलि ॥ ४२ ॥
सबके उर अभिलाष अभंगा। बोलब हँसब रामके संगा ॥
जेहिपर जाकहँ ध्रुवअनुरागा। ताकहँमिलत विलम्ब न लागा ॥
तिनहूँ सकल सुनी यह बाता। सिद्धि सदनआये चहुँ भ्राता ॥
आईं बेगि निकर हरषाई। आदर सिद्धि कीन सचुपाई ॥
रघुबर रूप निहारन लागीं। नयन प्रेम जल चल सुखपागीं ॥
कोउ देखति पदजावक सोभा। भूषनादि गुलफादिक लोभा ॥
कोउकलजंघसुदेखतिधोती। कटिकिंकिणिलखिप्रमुदितहोती ॥
कोउ नाभी उर बाहुँ निहारी। जामाँ लसत कन्हावरि डारी ॥
दो०—हृदैं पदिक आदिक सुभग, भूषन गलदर निंदु।

देखि रहीं अस्कंध छबि, मुख छबि हरमद इंदु ॥ ४३ ॥
अधर सुबीरी अरुण सुहाई। बाल दिनेश प्रभा जनु छाई ॥
काम म्यान ते किधौं निकारी। सिकली कीन धरी तरवारी ॥
चिबुक सुहनुथल सुंदर गालू। कोउ देखति नासा छबि जालू ॥
कोउजोहतिनयननकीशोभा। जिनहिंविलोकिमदनमनछोभा॥
सुधा गरल बारुनी समाना। श्याम सेत रतनार सुहाना ॥
रामविलोचनजेहिदिशिकरहीं। मरतजियतझुँकिझुँकिसोपरहीं॥
भौंहँ चाप जनु मनसिज केरा। चितवनि शायक तिव्र घनेरा ॥
लागीजुवतिनके उर घाऊ। दरद करतअतिसहि नहिं जाऊ॥
दो०-देखति कोऊ ललाट की, सुखमा तिलक सुरूर।
कोउ अवलोकति अलक श्रुति, कुंडल छबि रह पूर ॥४४॥
पगिया मौर बिचित्र सुहाई। अंग अंग लखि सकल लुभाई ॥
सुनिबोलनिबिहँसनि मुदमूला। बनितनतनुपटकीसुधिभूला ॥
तियन नयन झख रघुपति रूपा। बारिध सुखमां परम अनूपा ॥
परीं अगम जल भईं सुखारी। कढ़त नहीं काढ़े मुद भारी ॥
जुवतिन तनु बिकसी प्रभु हेरी। कंचुकि मसकि गई सब केरी॥
पाणि केर चूरी करकानी। तियनदशा नहिं जाय बखानी ॥
अहमित जिनके अपने रूपा। तिन लखिरघुपतिअंगअनूपा॥
गईं बिकाय तुरत बिनुमोला। सबकीगतिकिमिकहौं अथोला॥
दो०-श्री रघुनंदन छैल नृप, चितवत जिन की ओर।
तेहि सुधि नहिं घरबार की, जिमि मदान्धजन भोर ॥४५॥
धरि धीरज केहुँ भांति बहोरी। सिद्धि आदि सब राज किशोरी॥
पुनि प्रभु चितै अधिक अनुरागीं। गारीदेन दिआवन लागीं॥
एक सखी बोली मृदुबैना। सुनहु लाड़िले राजिव नयना॥
इमि कहँ लहेउ अनूपम गाता। की कीन्ही मनसिजपति माता॥

कहैं सिद्धि सुनिये नँनदोई। कुछ पूछों राखेउ जानि गोई ॥
सबहिं ब्याह सनबंध तें होई। निज निज ज्ञाति करैं सब कोई ॥
तौ भगिनीं केहि कारण पाई। ब्याहि गई शृंगीऋषि लाई ॥
कै मुनि ठगि लैगे उनकाहीं। की आपुइ गौनीं मुनि पाहीं ॥
बाजत रघुबंसी निहलंका। ई किमि लालजू पर्यो कलंका ॥
दो०—लषन कहा सुकुमारिसुन, जो बिधि लिख दिये भाल।
तेहिकों सोई ध्रुव होत है, कोउ न मेटनवाल ॥ ४६ ॥
सबकै कर्माधीन बिवाहा। जहँ संयोग होय तहँ चाहा ॥
कहँ रघुबंसिहूँ राजकुमारा। कहँ बैरागी जनक भुवारा ॥
भयोतौन तेहिघरम मसादी। विधि करतब सब अचलअनादी ॥
एक बात हँसि लागै पोई। सुनि संदेह लहै सब कोई ॥
तुमहूँसिद्धिवोश्रीनिधिअहू। जुबतिहिंजुबातिहिंकिमिभे ब्याहू॥
कोउ आली कह सुनिये ताता। तुमसन पार लहै को बाता ॥
कबतें नृपसुत बोलहु चोखे। उपजाये ऋषि ऋषिही पोखे ॥
राउर एनकी चालु न गोई। जाहिर है जानत सब कोई ॥
दो०—अवधपुरी के तियन की, भल करतूति उदार।
सिसु जन्मैं चरुखायकै, लगै न पियकर कार ॥ ४७ ॥
तब मुसुकाय कहत रघुबीरा। सुनहु लाड़िली चतुर गम्भीरा ॥
निज घरके अनरीत दुराई। उभेकर अपबाद चलाई ॥
जननिजनकबिनुजनमनकोऊ। निगमनीति जोरीयह जोऊ ॥
तुम्हरे सब जन्मे क्षिति माहीं। हमरे ओर चलनि इमि नाहीं ॥
कोऊ सखी कह सुनिये ताता। तीनिसै साठि हैं रउर माता ॥
ते सब एक पुरुष कर नारी। आवाति बर्ष दिवस पर पारी ॥
केहिविधि राखातिहैं पति आबा। तबहँसिरघुपति देत जवाबा ॥
नृपहिं बोलि लावहु निज एैना। लेहु परिक्षा सब मिलि पैना ॥

दो०—सिद्धिकी छोटी बहिन हँसि, कह सुनिये मम बात।
बालपनहिंते मुनिन सँग, रहेउ बंधु युत तात॥ ४८॥
यह छलछंद जाल रस हाला। सिखेउ कहाँ सो भनिये लाला॥
कीऋषिप्रमदनके सँगमाहीं। किधौंसिखेउनिज भगिनीपाहीं॥
मीठा कटुक स्वाद जो होई। चाखे बिनु नहिं जानै कोई॥
तब कह भरत बिहँसि सुनि प्यारी। कहिउ सत्यपैतुमहुँकुंवारी॥
इमि कहँ ज्ञान सुरस की पाई। की कोई कीन्हेउ असनाई॥
मुनि संग सिखे न सुज्ञान विशेषी। अवरसबातसिखेनतुमेपषी॥
तब सिधि बोलीं अधिक सचैना। भरतआपइमिजानिकहबैना॥
राउर गिनती साधुन मांहीं। राउर को रस हाँस न चाही॥
दो०—बहुरि भरत हँसि कहत इमिं, भली कहिउ सुकुमारि॥
आयन दरशन हेतु मैं, सुनि असनेह तुम्हारि॥ ४९॥
सइवचीनहि बिनुकहें पति आई। तनधन तें अब करु सेवकाई॥
जो नहिं झारै जेहि डँसि नागू। मंत्र बिसारै नतु अघ लागू॥
कहा कोउ सखि सुनु सब प्यारी। इन सबके इक बड़पन भारी॥
मुनि मख थापन गे दोउ भाई। तहँ यक भेव मैं एसनपाई॥
तीयताणुकालाखिइनशोभा। आई मन सिज बस मन लोभा॥
सो आचरण न भेइन कीन्ही। तबखिसियाय मारितेहिदीन्ही॥
बोले सत्रु आरि सुनु बाला। नाँहक अजस लगावहु जाला॥
बना न इनसन जो आचरणी। हम सनभरिलीजैसो करणी॥
दो०— सोधिहु नहिं करतूति तुम, प्रथम हमन सब केरि।
भा बिवाह तुम्हरे सदन, संसै हृदय घनेरि॥ ५०॥
रचौ छोभ न राखौ हेरी। लेहु परिच्छा हम सब केरी॥
जेहि कारण तुम रिस बिस्तारी। सो उपचारकरहु जनिप्यारी॥
तौ परिचर्या महँ अनयासा। बेद बंधु महजूद हौं खासा॥

15-197
अयोध्या

सुनि इमिसत्रुसालकरबाता। बोलींसौउम विमुखप्रमकाता ॥
अस कहँ सिखउ सयानप भारी। की कहूँ मिलीबधू गुणवारी ॥
की वेश्या पहँ इमि चतुराई। लहेउ लाल सो कहौ बुझाई ॥
चारिउ बंधु में आप की रेखा। सब से पेषित नवल विशेषा ॥
कह रिपदौन कहेउ तुम ठीके। मर्मी मर्महिं बूझत नीके ॥
सो०—हम परखा तौ ढंग, वेश्या तियते कोटि गुण।
अरु रेखा इक रंग, हैं मम तुमेरा लाड़ली ॥ ११।
ताते हमते तुमते प्यारी। यही विशेष सु नातेदारी ॥
श्री रिपुदमनकेरअसउक्ती। सुनिसिधिबिहँसिकहातिरचिजुक्ती
हे रसिकेस रामतौ रूपा। अनुपम निरखि मोहरति भूपा ॥
तौकेहिभाँति आपके ग्रामाँ। आपुसे बची होहिंगीबामाँ ॥
यसकहि सिद्धि रहीं अरगाई। सिद्धिकी करधरिकहरघुराई ॥
हे सजनी मानहु ममबाता। जगमरजाद जो रचेविधाता ॥
तेहि अनुहारिक सब संसारा। चलत करत सोई ब्यवहारा ॥
कहिउजोतुमना उचितकी बानी। अपनेअसढँगसबकरजानी ॥
दो०—इमि सुनि अनुजन सखन सब, हँसे ठोंकि करतारि।
अरुसिधि आदिक भूपजा, तेउ भईं मुदित अपारि ॥५१॥
सो०—हँसि हँसाय यहि खानि, दै दियाय गारी प्रभुहिं।
पुनि जिन जसउर आनि, तस लागीं करैं भावना ॥१२॥
कोउ सखि लागि श्रवण हरि केरे। कहकुछ बात सुप्रीत घनेरे ॥
परसकपोल मंजुकल शाली। मानति जन्म सुफलनिजआली ॥
कोउपदकंज चाँपि मुदभारी। हियलगाय तनुताप निवारी ॥
कोउ सखि गलमाल उतारी। मेलि लेहिं निजगर सुकुमारी ॥
रामहिं मिलन सरिस सुख होई। वारि अपनपौ देति हैं सोई ॥
कोउ मृदु अंजनप्रभुदृग देहीं। तेहिमिसुगात परसिसुख लेहीं ॥

कोउ चंदनचढ़ायरघुबीरहिं। सोइलगावतिनिजहि सरीरहिं॥
सेद सुगंध सुछुइकरिप्यारी। खोवतितीनिहुँ तापजो भारी॥
छं०—तिहुँ तापखोवति अपरप्यारी पानप्रभुहिंखवाइकै।
कछु वाहि महँ लै आपु सजनीं मगन जूठन पाइकै॥
अनुरूप रुचि सब आपनीं करि भावना रघुरायसों।
मथुरा चढ़ेउ चित राम मूरति सकल पूरित चायसों॥ ३॥
सो०—रसिक शिरोमणि राम, नवल प्रीति अभिलाष अति॥
जस जिनके उर जाम, रहा लालसा तवन रुचि॥१३॥
राखे सबकी करुणा सागर। बहुरि सिद्धिसन कह नयनागर॥
अब जो तुम मोहिं देव रजाई। गौनों जनवासे जहँ राई॥
सुनि रघुनंदन के इमि बानी। मिटा मोदमन भयो गलानी॥
सहमि गईं सिध्यादि सुकैसी। करणींसुनि हरि सबदहिं जैसी॥
बोलीं बिरह बचन सब नारी। रघुबर अपने करिबस धारी॥
प्रीति बढ़ाय रूपरस बोरि। निठुर बचन किमि कहतबहोरी॥
चाहत तुम अपने पुर जावो। तातसों हमकें जतन बतावो॥
केहि बिधि हम बिरहिनिके प्राना। रहे चयनतें कृपानिधाना॥
दो०—राउर मूरति नीर सम, हम सबके मनमीन।
किमि जीहैं बिरही घनी, भाषौ परम प्रबीन॥ ५२॥
सिरजे रहेव कि मनहिं अस, जब गौनब ससुरारि।
करब कतल मिथिला तियन, प्रीति षड़गते मारि॥५३॥
बनिता जाति अवध्य हम, सब बिधि राजकुमार।
सो तुम कानि न लेसहू, कीन्हेउ मन सुखसार॥ ५४॥
मार्‍यो चखन बिसिख बिषवारे। भृकुटी चाप चढ़ाय के प्यारे॥
जग बीड़ा कुल सीवँ प्रसंसा। ये सब होहिं क्षणक महँ ध्वंसा॥
लागि प्रीति जो क्रम मनबानी। सो नहिं छूटै शारंगपानी॥

जैसे जल लहि सनरजु गांठू। अरु जिमि नवै न उकठकुकाठू॥
तिमि कबहूँ छूटै नहिं नेहा। सरबस जाय जाय बरु देहा॥
ऊंचनींच चाहै जेहि पाहीं। लागै प्रीति सो अति प्रिय आहीं॥
तेहि देखे बिनु राजकुमारा। तरस न जाय कोटि उपचारा॥
यदपि रयनदिन मीत सरूपा। अवसि टिकै उरसुखद अनूपा॥
दो०—तद्यपि तरसत रहत चख, जुगल यार बिनु देखि।
जिमि चकोर राकेस के, जोहेहिं सुखी बिशेषि॥ ५५॥
प्रीतमचालुसुबिहँसनि बाचा। बिलगहोयनहिं हियते साँचा॥
पै तेहि विद्यमान को जोहन। अति अभिलाष होय मनमोहन॥
पेखियत बहु नर कल संसारा। पै बिनु जोहे आपन यारा॥
सुख नहिंहोय बढ़ै तु व पीना। जिमि चातकजलस्वातिबिहीना॥
मीत बिछोह मलिन मन कैसे। छीने कृपिनि की संपति जैसे॥
रघुबर प्रीति मान जे प्रानी। प्रीतम बिछुरन शूलते जानी॥
सब सुख भोग जहान के जौना। बरु निरास रह सबते तौना॥
परम पवित्र बिनीत सुनेहीं। तेहि बिषाद नहिं ईश्वर देहीं॥
दो०—जाति सीवँ कुल केर बहु, धर्म जाय नृप ढेट।
पै मूरति निजयार को, होय न नैनन ओट॥ ५६॥
बाचा शालरु परबस रहई। पै बियोग नहिं यार सो लहई॥
बहु बिधि दुख सहिजायशरीरा। नहिंसहिजाययार की पीरा॥
निज प्रीतम बिछुरत सुख जेते। मौमहँ दुख सम लागत तेते॥
यद्यपि हम अविवेकी नारी। जातिहीन सब भांति गँवारी॥
पैहिय लागै जेहि सन प्रीती। तेहि कर बिकौं होउँ नहिं तीती॥
हृदयनिठुरनिजस्वारथ हेतू। चली सकल दिन निकर अनेतू॥
पै उर छल नहिं सिरजौ तासों। जोरों प्रीति सुमन ते जासों॥
बरु निज सकलकुटुम तें न्यारू। रही सकलबिधि राजकुमारू॥

दो०—पै कुछ बीच न तासु सँग, राखौं मन बच कर्म।
कहौं असत्य तौ राम तुम, जानहु सब घट मर्म॥ ५७॥
हम सम नीचन कोउ भै माहीं। तुम सम तात ऊँच कोउ नाहीं॥
पै हिय नेह जो जोखहु प्यारे। तौ मम ओर जबर अति धारे॥
इमि बनितनके सकरुण बैना। सुनि रघुबीर भरे जल नैना॥
नेह रहे सु भली बिधि देखी। बोले प्रभु चित मृदुल बिशेषी॥
सुनौ तियन निज कहौं सुभाऊ। राखौं तुमसन गोय न काऊ॥
भौ सनकादि अजादिक देऊ। भारी इन सन नहिं जग केऊ॥
तेउ नहिं प्रिय मोहिं तुमहिं समाना। मृषा न कहौं मोर यह बाना।
मोसम प्रीति करै जो प्रानी। जानि अजान केहू बिधि आनी॥
दो०—चख पूतरि सम भामिनी, जोगवहुँ मैं तेहि काहिं॥।
अयगुण एक न देखहूँ, देखौं गुण तेहि पाहिं॥ ५८॥
मम इमि बानि है लाड़ली, जानैं नेहीं हार।
नतु मोहिं लहहिं न मनुज करि, बहु बिधि के उपचार॥
जिन जिन प्रेमी केर जग, सुनियत बड़ि मर्याद।
सोधहु तिन तिन माहिं जो, है यक यक अपबाद॥
बहु दुखसहि दिन करतेकंजा। लखहु बिचारि प्रीति कियें पुंजा॥
पै नहिं करुणा करत दिनेशू। प्रेमिहिं जारत परें कलेशू॥
पुनि लखु तरसत रहत चकोरा। चितवत शशि मग प्रीति न थोरा
ताहि जोहि मानत निज छेमाँ। बिधु मन नेकु न गड़ी सो प्रेमाँ॥
प्रीति किये अति मणि तें नागू। बिछुरत तेहि सहसा तन त्यागू॥
पै न प्रीति सो मणि के धँसई। दिन प्रति उदित होय नहिं झसई॥
चातक मोर जलद पर भारी। करत प्रीति सिधिराजकुमारी॥
नेकु न घन तेहि नेह बिचारैं। ऊपर ते पवि पाहन डारैं॥
दो०—अरु झँख जल बस देवस निसि, रहाति न कबहूँ भिन्न।

मीन केर इमि देखि रति, नीर के मन नहिं खिन्न ॥ ६१ ॥
लखु प्यारी दीपक सिखहिं, देखि सु सलभ लोभाय ।
कूदि जरत कृषानु के, लेमहु दरद न आय ॥ ६२ ॥
इमि बहु प्रीतिमान हैं प्यारी । चलनि पोच हिय लखहु बिचारी ॥
एक तौ एक पर त्यागत देहाँ । एक न चितवत निरदै गेहाँ ॥
हे सिधि आदिक राजकुमारी । ऐसन है नहिं नेह हमारी ॥
अपने प्रीतिमान जन संगा । तजौं न क्षणभरि प्रीति अभंगा ॥
प्यारी मम मीतमके काऊ । खर्व जानि अभिमान देखाऊ ॥
करौं ताहि अति निकर बिशाला । जाते नावहिं शिव विधि भाला ॥
अरु सजनीं सब भुवनन माहीं । सबहिनते अरचावौं ताही ॥
कहँ तक बरणौं तासु बड़ाई । हमहीं ताको शीस नवाई ॥
दो०—निज वहिके तनुमें तनिक, मर्म न टिकवौं फूर ।
कबहुँ सनेह न तजौं तेहि, करै जो कोटि कसूर ॥ ६३ ॥
राजकाज तिहुँ भुवन के, सम्पति सकल जु आहिं ।
अनुज तनय सिय देहँ निज, मोकहँ तसप्रिय नाहिं ॥ ६४ ॥
जस प्रिय लागत सहज सनेही । मानहु बचन कहौं सति एही ॥
बिविध शरीर धरौं जेहि लागी । कानन कानन बागहुँ जागी ॥
दुःख सहौं सिर ऊपर कीता । पै परिहरौं न आपन मीता ॥
गज गणिका अरु जमन जटाई । अजामील सेवरी कपिराई ॥
रिक्षप पौनज तमचर राऊ । ये सब जानहिं मोर सुभाऊ ॥
जो निज बाट बटोरि सकल थल । सो बाँधै मम चरण नेह भल ॥
अटौं मैं सेवक इव तेहि संगा । सजनी यह मम बानि अभंगा ॥
मोसे नेहँ जोरि जो फेरी । आस करैं दूजे सुर केरी ॥
दो०—बहु बिनती वह जन करै, तौ न जाउँ तेहि तीर ।
येहू बानि मम कठिन है, कह मथुरा रघुबीर ॥ ६५ ॥

बहुरि कुमित्र सुमित्र सुभ ऊ। बहुबिधि बरणे कोशल राऊ॥
होत पराभव मोकी जबहीं। सचराचर कोउ बचत न तबहीं॥
तबहुँन छै मम प्रीतम केरी। सुनहु सिद्धि प्रवीन घनेरी॥
मैं राखन चाहौं जेहि काहीं। ताहि नसावन हार को आहीं॥
अरु मैं चाहौं जिन कहँ मारा। को है तिनको थापन हारा॥
मैं तनिको जेहि चहौं भलाई। तेहि सुर सकल करैं सेवकाई॥
छनमहँ रंकहिं धनद समाना। करौं धनदलघु रंक ते नाना॥
मसकहिं बिधि ते करौं बिशाला। अजहिं मसकतेहीन अपाला

दो०—मो बिरंचि सनकादि मुनि, सकल सुरन को प्यारि।
मही नचाऊँ सकल मिलि, देखो हृदय बिचारि ६६॥
जपतप संयम नेम ब्रत, करैं अनेक उपाउ॥
इन सबसे नहिं जीति सक, मोहिं कहौं सतिभाउ ६७

प्रेमी प्रानिन ते मैं हारी। यद्यपि परम स्वतंत्र हौं प्यारी॥
कछु न बसाय ताहि सन मेरी। ते तुम प्रेम की मूरति हेरी॥
सुनुसिधि आदिक राजकुमारी। तुम सब मोहिं प्रानहुँते प्यारी॥
तौ उर जौन मनोरथ आजू। सो सब भाँति सुपुरउब काजू॥
मोकी बीड़ राखि सुनु प्यारी। होब नाहिं तुम सबते न्यारी॥
सकल भाँति मैं साँवरु तोरी। अरु सब भाँति तुँ सबहो मोरी॥
सत्य सत्य यह साति जो भाषा। मानहु सब भामिनि ताजिमाषा
रामबचन सुनि आनन्द ठाटा। तुरत खुले हिय कपटकपाटा॥

दो०—उठी तियन के हृदय महँ, नेहँ तरंग बिसेषि।
जिमि पूरण ससि कहँ निरषि, बारिधिमोद अलेषि ६८

तब धीरज धरि दुहुँ करजोरी। सिद्धि आदि तिय कहतिबहोरी
धन्य सुकृत हम सबकर ताता॥ अबनमोहिं समकोउ जगआता॥
डूबति रहीं सकल भौ सिंधू। करगहि काढे आरत बंधू॥

प्रति उपकार न होय तुम्हारी। हम सबते जस राउरकारी॥
बिधुसम होहिं न कोटिन तारा। रबिसम नहिं षद्योत अपारा॥
बड़े करैं प्रीति लघुन पर कैसे। सिंधुफेन गिरितृण पर जैसे॥
जेहि जेहि जोनि करम आधीना। देहिं जनम मम बिधि प्रबीना॥
तहँतहँ रसिकराज रघुराई। तुमहीं कहँ निज प्रीतम पाई॥
दो०—बरु बिरंचि बहु जातना, करहिं हमहिं पर लाल।
पै सुलगन मम आपकी, छुटै न कौनेहुँ काल॥ ६९॥
सुनि प्रमदन के अति अनुरागा। करुना करके करुणा जागा॥
तब सब कहँ बिसिषासन पानी। सनमाने कहिकहिमृदुबानी॥
सबते बिदा मागि सुख ऐना। चले अनुजजुत छबिअति पैना॥
मानहुँ सिद्धि अयन ते रूरे उदय भये चहुँ द्विज पति पूरे॥
पान खवावति रघुपति काहीं। चलीं सिद्धि प्रमुदित मनमाहीं॥
आये भूप मदन महँ आसू। जहाँ बिराजति अनुपम सासू॥
रानी के पद धरि रघुराई। बिदाहाने हित बिनै सुनाई॥
सुनि जामात केर मृदुबानी। नैनन ते चले प्रेम की पानी॥
दो०—रुकहु की गौनहु नाहिं कछु, भनीं रानि सुधिभूल॥
पुनि धीरज धरि मुदित मन, देखि राम सुखमूल॥७०॥
तुरत मगाय अभूषण नाना। कीमति तासु न जाय बखाना॥
रानी अति प्रमुदित मनमाहीं। दीनमखा अनुजन प्रभु काहीं॥
पाय पोसाक सकल सिरनाई। सासु असीस दीन हरषाई॥
चलतबेर श्रीसिद्धि बहोरी। बिनती करन लगी करजोरी॥
हे रघुबंशमणी गुनरासी। सहजहिं हमतौ चरणन दासी॥
प्रेमतृषित अति जद्यपि नारी। तद्यपिप्रभु निज बिरदबिचारी॥
मोपर छोह न छाड़ब स्वामी। सब प्रकार तुम अंतरयामी॥
इमि सुनि बैन नैन भरि नीरा। पुलकित तनु बोले रघुबीरा॥

दो०—द्वापर जुग के अंत में, लेब कृष्ण औतार ।
तब तहँ हम पुरउब सकल, मन अभिलाष तुम्हार ७१
तौबदि मैंहौं बहुत विधि, समुझाये श्रीराम ।
अमी सरिस सुनि प्रभु बचन, हरषि गई निज धाम७२
रघुबर भ्राता सखन जुत, निमिपति सभा में आय ।
करि जोहार पद परसि कै, बहुरि रजाइसु पाय ॥७३॥
श्रीनिधि आदिक राजकुमारे । आय आदि पवरि तक सारे ॥
बहनोइन सो हाथ मिलाये । करि जोहार सदन चलि आये ॥
तह सब सेवक भाँति अनेका । साजे बाहन यकतें एका ॥
बाजे बाजा बिविध प्रकारे । चतुर नकीब सु बचन उचारे ॥
कोउकोउ गजन पै भे आरूढ़ा । कोउकोउ अस्वन चढ़े अमूढ़ा॥
यहिबिधि बहु प्रकार असवारी । भे असवार सवार निहारी ॥
सुरन सुमन बरषत समुदाई । सो समाज सुखबरणि न जाई ॥
आपु चले सुखपालहिं चढ़िकै । जुवतिन लागीं झांकन कढ़िकै॥
दुहुँदिसि सेवक ढारत चौरी । रघुबर छबि लखि तियभईबौरी ॥
दो०—कहति परस्पर नारि सब, बिह्वल बात अनेक ।
जन्म कौनेहूँ मोर यह, आसा पूजे नेक ॥ ७४ ॥
रामकुँवरसों कहि कुछ बैना । भुजा पसारि मिलब भरि चैना ॥
कोउ कह भूप कुलन की तीया । पूरब जन्म सुकृत भरु कीया ॥
हँसि हँसाय जो रघुबर संगू । जनमसुफल करि लीन अभंगू ॥
श्रीकौशिल्या सुक्ति समाना । प्रगटे रतन राम भगवाना ॥
सोसिय केर कंठ को कंठा । भयो सखी सिय भागि अकुंठा ॥
श्रीमान्डविउरमिल श्रुतिकीरति । सकलबाहिनबर लहीसुघरअति
इमिउन सबकी करत बड़ाई । आपुहिं सब निंदति अधिकाई ॥
कोउकह सखी सोच मति आनो । आपनभागि इतनहीं मानो ॥

इन्हें निहारि लीन भरि आषी। तबहूँ सुकृतहीन नहिं भाषी॥
पुन्य अनेक जन्म कर होई। तब सखि हरिदरसन लहसोई॥
दो०–आरत बैनहिं सुनत हरि, दया लागि हिय माहिं।
चितै सबहिं प्रबोधि अति, सुखी करत मगजाहिं॥७५॥
आये जब जनवाँस ढिग, तब सब बाहन त्यागि।
भ्रातनजुत करुनायतन, धाय पितापद लागि॥७६॥
कीन जोहार भूप उर लाये। बिनु देखे की तपनि बुझाये॥
सादरकरि समीप आमीना। बूझनलागे नृपति प्रबीना॥
केहि बिधि कीन कलेवा लालन मोसनकहौ समस्त सोहालन॥
कह प्रभु सब घरबात जोहूआ। सरलसुभावकपट नहिंछूआ॥
सुनि मुसकाने सकल समाजा। कहि न जाय जस प्रमुदितराजा
बहुरि सुतन कहँ दीन रजाई। निजनिज बासहिं निवसे जाई॥
इतउत लोग सुखी अधिकारा। पलकसमान जाहिं निसिबारा॥
राम बिवाह की सुख प्रभुताई। शेषशारदा सकहिं न गाई॥
छं–न गायसकबानी अहीपति ह्वै बिदा मिथिलेश ते॥
दूलहदुलहिनिनि भ्रातजुत नृप अवध आय बिशेष ते।
मुदितबनितानि परछि बिधिवत सकलमंगल गाइकै।
मधुरा सुलाई सबरदुलहिनि महल में सचुपाइकै॥४॥
सो०–धरि सिंघासन चार, सुतन बधुन आसीन करि।
कीन्हीं कुल ब्यवहार, सबबिधि मातु सुहरष भरि १४
धूपदीप बिधिवत करि रूरी। तनैं पनोछुन लखि सुखपूरी।
कीन निछावरि बस्तु अनेका। तेहि औसर सुखभयो न केका॥
दुलहिनमुखअवलोकनकीन्हीं। सबातियवारि अपनपौदीन्हीं॥
बदन देखौवा बनिता नाना। दीन्हीं सकल सुबस्तु निधाना॥
सिय मुखसम कौशिल्या माई। दने लायक बस्तु न पाई॥

देनसरिस निज सुतहिं बिचारी । रामहिं दे सियबदन निहारी ॥
सकलसुदुलहिनिंदखिसुखारी । निज निजसदन गईसब नारी ॥
जबते ब्याहि राम आगारा । आये भयो अनंद अपारा ॥
दो०—राज समाज बिराज अति, बइठ सोह नर कंत ।
नाना मुनि आसीन हैं, परम बिशारद संत ॥ ७७ ॥
बेद पुरान बशिष्ठ कह, सकल सुनहिं मन लाय ।
कौशिक गुण बरणन करे, सब हरषे अधिकाय ॥ ७८ ॥
मांगि बिदा महिपाल तें, राखि हृदय श्रीराम ।
मुदित गाधिसुत शिष्य सह, गवन किये निज धाम ॥ ७९ ॥
सखियन युत सीता महरानी सखन अनुज सह सारँगपानी ॥
बन प्रमोद बिच मोद न थोरी । ऋतु बसंत महँ खेलत होरी ॥
ग्रीषम ऋतु महँ फूल शृंगारा । करि सिय पिय बसैं फूल अगारा ॥
चलत फुहार बहार निहारी । लसत सीय रघुबीर सुखारी ॥
पुनि पावस ऋतु जनक कुमारी । दशरथ नंदन जन मन हारी ॥
झूलत कनक हिंडोर सुहाये । राग मलार सखिन सब गाये ॥
शरद ऋतु महँ रहस प्रकाशी । बिपिन प्रमोद मध्य सुख राशी ॥
बहुरिहिमन्त शिशिर ऋतु मांहीं । महल मध्य सिय कंतबसाहीं ॥
दो०—राम सीय अनुपम निरखि, हरषहिं सब पुर लोग ।
दिन प्रति नवल अपार अति, बढ़त जात सुख भोग ॥ ८०
राम सीय दोउ बिलसत प्रीते । यहि बिधि दुइ षट सम्बत बीते ॥
एक बार बिधि नारद काहीं । सुर हित पठये रघुपति पाहीं ॥
आये मुनि सिय राम निकेता । उठि पद बंदे प्रिया समेता ॥
अति आदर रघुनंदन कीन्हे । पद पखारि पादोदक लीन्हे ॥
तब मुनि बोले अति हरषाई । सुनिये नीति सिंधु रघुराई ॥
तौ गुण गावत ब्रम्ह अगारा । रहेउँ बहुरि अस हृदय बिचारी

प्रभुपद दीख न बहु दिन गयऊ। अधिकलालसा बाढ़त भयऊ॥
प्रभु सब ठाम सुव्यापक यद्यपि। सगुण रूप मोहिभावत तद्यपि॥
दो०—अवध चलत मोहिं जानि बिधि, भनत भयेउमिस्वामि।
मम बिनती प्रभुसन कहेउ, यद्यपि अंतरयामि॥ ८१॥
लीन्ह मनुज जन्म जेहि हेतू। करहिं सम्हारसो अब श्री केतू॥
सुनि रघुबर हँसिबदनमयंका। कहमुनिअजहूँ अजमनसंका॥
तुमससमुझाय कहब बिधि पाहीं। आय देखिहैंकछु दिनमाहीं॥
पुनि पुनि पद धरि हिय हर्षाई। मुनि गे बिधिगृहतबरघुराई
कह सीता सन पुरुष हवाला। कारणसबसमुझायकृपाला॥
हे प्रिय तजि ठकुराईसाजा। चलीबिपिनिमुनिदेवनकाजा॥
जेहिके भृकुटि बिलासते जोऊ। जग शम्भव पालनलै होऊ॥
सो प्रभु जतनबिचारत आहीं। केहि बिधि नासौंदनुजन काहीं॥
दो०—मातु पिता पुरराज, सुख, भाइ भरत अस त्यागि।
गौने चाहत बिपिन कहँ, सुरसंतन हित लागि॥ ८२॥
सो०—अस दयालु के गेरि, भजहिं जाय जे अपर सुर।
ते शठ बिपति घनेरि, क्योंन सहहिं शिव निगम कह॥ १५॥
दो०—नृप दशरथ सुत त्यागि, अस को समरथ सुर आन।
जो भव बन्धन छोरि सक, साखी बेद पुरान॥ ८३॥
राउ रानि पुर बासि अशोकी। रामचन्द्र मुख चंद्र बिलोकी॥
नृप यकबार साजि सब साजा। करन लगे रामहिं युवराजा॥
केकै सुता बात सो खोई। भरतराज रघुबर बन होई॥
बीचहिं भंग भे सो उतसाहा। गे बन लछिमनसिय सियनाहा॥
रथते उतरि देवसरि तीरा। सूत बिसर्जन किय रघुबीरा॥
मिलिनिषादप्रति गंगउतरि कै। भारद्वाजमुनि दरशनकरि कै॥
यमुनउतरि पुनि करि स्नाना। बालमीकपद धरि भगवाना॥

चित्रकूट पर कीन निवासा। इत सुमंत आयो नृप पासा॥
रामचन्द्र कर हाल सुनावा। सुनि नृप हृदय लागि जनु दावा॥
रघुबरबिरहाबिकलमहिपालू। जिमिजलबिनुझषमणिबिनुब्यालू॥
पुनि भै गउ केर गति कैसी। नृपज जाति सम्पाति की जैसी॥
नृपकहि रामराम षटबारा। तनुतजि सुरपति सदन सिधारा॥
भूपति क्रिया भरत किय आई। गये रहे ननिऔरे भाई॥
बहुरि सकल पुरबासि समेता। भरत गये जहँ कृपा निकेता॥
दो०--तब बहु बिधि रघुबंशमणि, समुझाये भे बोध।
पुनि प्रभु पांवरि भरत लै, लउटि गये पुर औध॥ ८४॥
चित्रकूट पर कृपानिधि किये कुछकाल निवास।
कीन्हेउ बहु बिधि चरित प्रभु, इंद्रज शंसय नासि॥८५॥
चले दूसरे बिपिनि हरि, सीता लषन समेत।
अत्रि दरशकरि असुरहति, सब मुनिकहँ सुखदेत॥८६॥
पंचबटी महँ जाय बहोरी। किये बास हरि मुनि दुख तोरी॥
एकबार सुपनेखा आई। कीन्हिसि छल प्रभु कुतनु कराई॥
खरदूषन त्रिशिरादि गोहारी। लगे सबहिं हरि छन महँ मारी॥
सुनि दशकंध बंधु कर मरना। लै मारीच चलेउ सिय हरना॥
कंचन मृगभा रावणकामहिं। लखि सिय प्रेरित कीन्हीं रामहिं॥
तबगे कपटमृगहिं हतिदयऊ। सियकटुबचसुनिलषनहुँ गयऊ॥
तब छाया मायामय सीया। रावन काल बिवश हरि लीया॥
गीध जटायू सिय दुख देखी। धाय कियो संग्राम बिशेषी॥
बहुरि दशाननहति गिद्धेसहिं। सिय लै गयो आपने देसहिं॥
बन अशोक महँ दीन टिकाई। इहां राम लक्षिमण मुरझाई॥
सिय बिहीन तजि कुटी खरारी। खोजत चले गीध कहँ तारी॥
पुनि कबंध कहँ हति भगवाना। सेवरीहिं तारि मिले हनुमाना॥

दो०—करि सुकंठ तें मित्रता, मारि बालि कहँ राम।
राज दिये सुग्रीव कहँ, गिरिहिं बसे सुखधाम ॥ ८७ ॥
तेहि औसर बरसात ऋतु, रहा गयो जब बीति।
तब रघुपति सियसुधि बिना, भयो अधिका बिपरीति ॥८८॥
लखनराम कररुख निरखि, क्रोध कीन अधिकाय ॥
तब सुग्रीव सुदीन ह्वै, मिले रामसन आय ॥ ८९ ॥

अति बलिष्ठ रघुबर तौ माया। सुरनरमुनि सब कहँ भरमाया॥
मैं अति तुच्छ जाति कपि केरी। छमहु नाथ सब औगुनमेरी॥
सुनि रघुबर सुकंठ उर लाई। सिय सुधि बेगि मँगावहु भाई॥
तब मन मुदित भए कपिराई। चहुँदिसि सीता खोज कराई॥
हेरत कपि हारे जगमाहीं। सीता पता मिलत कहुँ नाहीं॥
हरि इच्छा सम्पाति भेटाना। गीधराज सिय पता बखाना॥
सुनि हनुमंतबली अति बंका। सिंधु कूदि आयो गढ़ लंका॥
सिय अशोकवाटिका में पाये। दै मुदरी हरि कुशल सुनाये॥
बहुबिधि सिय प्रबोधि करि कीसा। बाग उजारे सुनि दससीसा॥
कपि पकरै कहँ सुभट पठायो। सबकहँ हनुमत मारि गिरायो॥
पंचमहा सेनापति मारे। सप्तमंत्री पुत्र सँघारे॥

दो०—अच्छकुमारहिं मारि पुनि, सेना हते अपार।
मेघनाद ब्रह्मफाँस तें बाँधि लाय दरबार॥ ९० ॥
हनुमत सोउ शरतूर तें, पै राखी बिधि कानु।
बहुरि रावनहि तरफ तें, पाय गयो कृशानु॥ ९१ ॥
अज सरते पुनि मुक्त ह्वै, जै श्रीराम पुकार।
लंक जारि सिय पावँ धरि, फिरि आयो यहिपार ९२॥
मिले सकल कपि भालुजुत, हरषि चले सुख पाय।
मधुबन कर फल खाय सब, आये जहँ कपिराय॥

सिय सुधि हनुमत प्रभुहिं सुनाये। दीन्हे मणिहरि हृदैलगाये॥
चूड़ामणि निज प्रिय कर देखी। राम नयनजल भरयो विशेषी॥
साजि भालुकपि कटक तुरंता। सिंधुतीर आयो भगवंता॥
तहँ हरि शरण बिभीषन आये। दीन निवाज ताहि अपनाये॥
रघुवर सागर निग्रह कीन्हा। तब नलनील सेतु रचि दीन्हा॥
तहँ शिव थापि राम सिरनाई। अनुज सहित कटि तून बनाई॥
लैकर धनुशर लंका माहीं। उतरे कपिदल गिनि नहिं जाहीं॥
यकतें दसगुन दसदस गूनूँ। सत तेहि दसगुन सहस सुपूनू॥
तेहि दसगुना अइतु यकहोई। पुनि दस अइतु लाख यकजोई॥
पुनि सौ लाख केर यक कोटी। बहुरि कोटि दसगुन करनोटी॥
दो०—पुनि दसकोटि कै दसगुना, यक अरबुद दसयेहु।
दस अरबुद जन कहत तेहि, दसगुन खर्ब इकलेहु ९४
बहुरि खर्बकर दसगुन भाई। दसखर्ब होइ तेहू दसपाई॥
एक नील दसगुन दसनीला। तेहि दसगुन यक पदुम कहीला
ऐसे पदुम अठारह आहीं। जूथप जुथकर मिति कुछ नाहीं॥
उत रजनीचर अपरमपारा। मददालि आयो बालिकुमारा॥
मंदोदरि बहुबिधि समुझाई। मानन रावन कह मुसुकाई॥
तिय मोहिं निज भुजजोर अभीता। राजकरत चौंसठजुगबीता
तिन्हैं अछतरिपु पद धरौं कैसे। कादर केर कार हैं ऐसे॥
इमि सम्मूह गर्ब दसभाला। कहेउ कहौं अब युद्धकी हाला॥
घटश्रुति घननादादि नरादा। कीन्हे समरसु जबर जियादा॥
करिकरि युद्ध मुये सब बीरा। तब आयो दसमुख रणधीरा॥
कीन्हासिरन अति मायाठाना। पुनिपुनिप्रभुतेहि सिरभुजभाना
दो०—भयो लराई अमित अति, कहि को पावै पार।
मथुरा तेहि संग्राम की, कहत कछुक सुम्मार॥९५॥

सो०—जब दस सहस मतंग, महास्यन्दनी डेढ़मे।
अरु दस लाख तुरंग, दस्सकोटि पैदर मरैं॥ १५॥
एक कबन्ध सो युद्ध सराही। इकनर बिनु सिर नाचै ताही॥
जब असकोटि कबन्ध नचाहीं। तब यक खेचर संख्या आहीं॥
नभसुर बिनु सिर नाचै एका बतरावत हैं खेचर तेका॥
पुनि इमि खेचरौ नाचैं कोटी। तब रघुबर के धनुमहँ मोटी॥
एकबार बोलै जिमि घंटा। तहँ यक रावन राम के टंटा।
एकरसबाज सात दिन राती। सालिकराम अर्चै जेहि भांती॥
प्रभु रावन रन जथाँ अपारा। तस तिहुँकाल न होनेउ हारा॥
जिमि नभसिंधुपरिस नभ सिंधुहि। तिमिहै युद्ध रामदसकंधुहि
रामनिधन कीन्हेउ दससीसा। निजपुर पठये सुरदुख खीसा॥
दो०—लंकाराज विभीषनहिं, दीन सिया लै राम।
जुत समाज चढ़ि पुस्पकहिं, गौन किये निजधाम ९७॥
जेहिजेहि मग निरमत प्रभू, गये रहे हैं लंक।
तेहि तेहि मग आवत भये, करि मुनि बिबुध असंक॥
प्रथमहिं निज आगमन हरि, भरतहिं दिय जनवाय।
भरत प्रेम हनुमंत सुख, सुनि चले हर्ष बढ़ाय॥९९॥
उतरि अवध ढिग कह श्रीरामा। जाहु बिमान धनदके धामा॥
हरष बिरह जुत सो चलि गैऊ सहसमाज प्रभु आवत भैऊ॥
गुरुद्विजपद धरि भरतहिं भेटे। जनित वियोग दुसहदुख मेटे॥
सकल मातु पुरवासिन काहीं। मिले राम सबकहँ छणमाहीं॥
सबके गृह तेहिदिन गे रामा। अरु भोजन किय सकलके धामा॥
सीयराम मुखचन्द्र बिलोकी। भयनिकर नरनारि असोकी॥
पुनि रघुबर अभिषेकके काजा। सचिव सजाये सकल सुसाजा॥
चहुँपयोधि नदनदी को नीरा। दिये मगाय सुगलमतिधीरा॥

दो०-रघुबर रुख लखि सेवकन, धाये सकल सुजान।
सुग्रीवाँदिक सबन को, करवाये असनान। ॥१००॥
रामगोद निज भरत कहँ, करि निरवारे बार।
तिहुँ भ्राता नहवायऊ, प्रभु करुना सुखसार॥ १०१॥
आपु जटा निरुवारि नहाये, पट धारि चंदन लगवाये॥
मणिगण भूषन सजे सुअंगा। सुखमाँ लखि सकुचात अनंगा॥
सियहिं सासु शादर नहवाई। अनुपम पटभूषन पहिराई॥
रामबामदिसि करि आसीन्हीं। निरखि सुफल निजजनम हिं चीन्हीं
रामरूप लखि गुरु हरषाई। दिव्य सिंहासन तुरत मगाई॥
राजसभा बिच ताहि धराये। सादर सियरामहिं बैठाये॥
राज तिलक श्रीरघुपति माथा। कीन प्रथम प्रमुदित मुनिनाथा
निगम मंत्र अभिषेक कै पढ़िकै। सब द्विज दिये असीस सुबढ़िकै
दो०-राजासन पर राम कहँ, देखि देव ब्रह्मादि।
जैजै कहि बरषै सुमन, हनि दुन्दभि अहलादि ॥१०२॥
निरतैं सुरतिय गायजस, चितै सुदम्पति रूप।
नखसिख सीताराम को, सुखमा परम अनूप ॥ १०३॥
लखन छत्र लीन्हें खड़े, भरत सत्रुहन चौर।
ब्यजन एक हनुमान यक, लियेकीस सिरमौर ॥१०४॥
सो०-चर्म खड़ग लंकेस, लियं अंगद धनुबान हैं।
शक्ती नील बिशेष, हरषि लिये इमि सब सखा ॥१६॥
बिप्रन लहे बिबिधि बिधि दाना। पटभूषन जाचक मनमाना॥
भूप अनेक सकल पुरबासी। नजर नेउछावरि करहिं हुलासी॥
तनय निहारि नयन फल लीन्हीं। बिधिवत मातु आरती कीन्हीं
पुरट केर पंकज की माला। जटित सुमणि अरु मुक्ताहाला॥
बाइउकर सुरराज पठाये। रामहिं दै सादर सिरनाये॥

रामराज कर सुख प्रभुताई। कहि नहिं पार लहैं अहिराई॥
पुनि चारिव श्रुति तिन के नामा। जुजुरअथरबनरिगुअरुसामा॥
आये सब धरि बंदी रूपा। रामकी अस्तुति कीन अनूपा॥
दो०—शिव सनकादिक षट बदन, सुमुनि निपट प्रवीन।
सकल महा नृप रामकी, अस्तुति सेवा कीन॥ १०५॥
प्रमुदित सब नि ज निज सदन, गे तब राजिव नैन।
दिलवाये सब सखन को, सुंदर सुखद सु ऐन॥ १०६॥
कहेउ लखन ते श्रीरघुराई। पद जुवराज लेहु तुम भाई॥
लखन न लीन राज कर कामा। किये युवराज भरत कहँरामा॥
औध प्रजा निज पुत्र की नाईं। सबदिन पालत राम गोसाईं।
देखत न्याउ अनेक प्रकारी। प्रभु बिलोकि सब होहिं सुखारी॥
भरत लखन रिपु दवन समेता। भवन बसत श्रीकृपा निकेता॥
जो गिरि कज्जल की मसि करई। सागर बासन में सो धरई॥
कल्पवृक्ष की कलम बनाई। महि कागद बानी गणराई॥
लिखे बइठ बरु लिखन की चीजू। जाय बराय न प्रभुगुनछीजू॥
दो०—निगमागम सब कहत इमि, पै निज बुधि अनुसार।
गावैं कवि प्रभु चरित इक, इक अच्छर अघछार १०७
जै नृप दसरथअजिर बिहारी। कौसिक मखपालक सुभुजारी॥
जै मुनितिय अघहरि पद रेनू। मिथिलापुरबासिन सुखदेनू॥
जै सियराम सु अवधबिहारी। पँड़ो महाबान धनुधारी॥
जै दससीस आदि खलदमनू। गोमुनि सुरदुख हरिश्रीरमनू॥
जै रघुवंशनाथ श्रीरामा। मथुरा पुनि पुनि करत प्रनामा॥
रहे सु ग्रंथ यह रामविलासू। रसिक जननकहँ परमसुपासू॥
जे अनुराग सहित यहि काहीं। कहेसुने प्रमुदित मनमाहीं॥
ते करि बहु प्रकार सुख भोगू। अंत रामपुर पइहैं लोगू॥

दो०—पाँच प्रकार के छंद हैं, रामबिलास में भारि।
एक ठाउँ करि सकल की, संख्या कहौं बिचारि ॥१०८॥
कुछ कम बसु सत पद अधिक, सुभग चरित सियकंत।
मम बुधि लघु जो ठीक नहिं, पदसो सुधारब संत १०९
अवध ते प्राचीदिसि मम गाऊँ। पाँच कोस परमान बताऊँ॥
बस्ती जिला अमूढ़ा राजू। हरैया तहसील बिराजू॥
ग्राम रामगढ़पुर चौगड़वा। नदी रामरेखा जहँ ढरवा॥
छत्री ज्ञाति सुमाणि रविबंसी। नाम भागवत जाहि प्रसंसी॥
श्रीबलदेव सिंह गुनधामा। तासुपुत्र हूँ मथुरा नामा॥
दीनमलीन रहेउँ अधिकारा। बारबार हरि शरण पुकारा॥
दीनबन्धु निज बिरद सुसोधी। हरहुनाथ मम बिपतिपयोधी
तब श्रीरघुपति करुणानंता। प्रणतपाल सचराचर कंता।
राखे शरण जानि जन दीना। भयों सनाथ गयो दुखपीना॥
छं०—दुखपीन गौने दीन केरे परमहित भगवान हैं।
बहु पतित तार्‌यो सुजस छायो साखी निगम पुरान हैं॥
जेहि रामनाम प्रभाव ऐसन मरत जो मुख आवई।
मथुरा पपिष्ठी होय अति सोऊ रामधाम सिधावई।
दो०—जो चाहो जिय क्षेम, करु उपाय यह सरल है।
जपहु सदा करि नेम, रसना ते प्रभु नाम को॥
रामराम सियराम सिय रामराम सिय राम।
मथुरा स्वांसा प्रति जपो, त्यागि सकल मद काम।
श्रीगुरु भगवतदास के, पद धरि मकर के मास।
मथुरा सिंह पूरण कियो, पोथी रामबिलास॥११०॥
दो०—छंद मध्य मथुरा कहा, पै मथुराप्रसाद।
भित्रोबर यह जानियो, नाम केर मरजाद॥

दो०—रामकृपा पूरन भयो, मथुरा पहिला रत्न।
ग्रंथादर सज्जन करैं, करो राम सोइ यत्न ॥ १११ ॥

इति श्रीरामबिलासे सकल गुनरासे वो रसिक जन सुपासे बिमल_गुण भाषे मथुराप्रसादसिंहकृत सम्पूरनम्।

कबित्त सवैया।

श्रीरामबिलास कहा पहिले पुनि रामचरित्र सम्बाद बखाना। रामकृपा से बहोरि कहा श्रीमथुरा सुखावलि काहिं सुजाना॥ श्रीद्रौपदी चरित चौरासिका बरनि बहोरि श्री आनन्द सागरगाना। पाँचौ ग्रंथ मिलाय कै नाम धरेव मथुरा पंचरत्न महाना॥ १ ॥

ठा० मथुराप्रसादसिंह कृत।

श्रीरामबिलास दोहा चौपाई में श्रीरामजन्म बिवाह सारिनि सरहजि से हाँसबिलास बन गवन रावनादि बध राम राजगद्दी समेत बरनन है १ वो श्रीरामचरित संबाद दोहा सवैया कवित्त में ठौर २ मुरतियों का संबाद रामलील को बरनन है २ ॥ वो श्रीमथुरा सुखावली अनेकों देवताओं की अस्तुति वो कृष्णा औतार ओ रामाऔतार के भजनभाव अनेक राग व रागिनियों वो कबित्त दोहा व फगुवा मे बरणित है ॥ ३ ॥ व श्रीद्रौपदी चरित चौरासिका में श्रीद्रौपदीजी का जस कबित्त व छंदों में बरनित है ४ व श्रीआनन्दसागर में श्रीरामजीकोसु जसका पाठ करने काबिल बरनित है ॥ ५ ॥

लेखक ठा० मथुराप्रसाद सिंह
सा० चौगड़वा जिला बस्ती

मथुराप्रसादेन प्रेम निर्मितोऽयं रामबिलासाख्यो ग्रन्थो मनोहरश्च भगवच्चरण रतिवतामिति स्वीकृतोऽस्ति सर्वैष्णव पंडित रामवल्लभाशरणेन ॥

यह रामबिलास ग्रंथ प्रेम से निर्मित होने से भगवच्चरण प्रीति वालों को मनोहर है अतः हम को अति प्रसन्न है इति ॥

द: श्री पं० रामवल्लभाशरणजी

श्री जानकी घाट श्री अयोध्याजी

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
15198
अयोध्या
श्री

वैष्णवाचार्य स्तोम

(विविधग्रन्थाणि)